ओमशांति। बच्चों ने ओमशांति का अर्थ तो अच्छी रीति तो समझा ही है। बच्चे जानते हैं अहम् आत्मा। अब आत्मा तो शरीर में प्रवेश है। आत्मा के ऊपर यह शरीर एक कवर है; जैसे तकिये को कवर डालते हैं ना! कोई भी चीज़ को कवर किया जाता है। तो यह शरीर भी आत्मा का कवर है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा को इन आँखों से देख नहीं सकते। चाहते हैं, आत्मा का सा० हो। यह निश्चय तो करते हैं ना– बरोबर मैं आत्मा हूँ और मेरा यह शरीर है। कोई को भी साक्षात्कार नहीं हुआ है– आत्मा कैसे है, क्या है। जानते हैं, अहम् आत्मा है, अहम् आत्मा का कोई रचता ज़रूर है, जिसको फिर कहा जाता– प०पि० परम+आत्मा। यह कौन समझाए रहे हैं? जिसका यह गीत सुना– भोलेनाथ। डमरू आदि की कोई बात नहीं है, न कोई शंखध्वनि है; यह तो नॉलेज है जो मुख से दी जाती है। जबकि प०पि०प० नॉलेजफुल, जानीजाननहार कहा जाता है, तो वह क्या जानते हैं? मनुष्य नहीं जानते, उनको नॉलेजफुल, जानीजाननहार क्यों कहा जाता। वह चेतन है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप और ज्ञान सागर है। बीज क्या बतावेंगे? झाड़ के आदि–मध्य–अंत का राज़ बतावेगा। आगे और पिछले कर्म,विकर्म,अकर्म की गति समझाते हैं। पास्ट–प्रेजेन्ट–फ्यूचर क्या–2 करत भए, यह सब ब्राह्मण बच्चों को ही समझाते हैं। तुम प०पि०प० की संतान आत्माएँ तो हो, फिर शरीर में आते हो तो तुम ब्रह्मा की औलाद मुखवंशावली ब्राह्मण हो। यह है रूहानी कनेक्शन, न कि बल्ड कनेक्शन। तुम कुख से पैदा नहीं हुए हो, तुम हो मुख की संतान। अब विचार करने की बात है– ब्रह्मा को प्रजापिता ज़रूर कहा जाता है। अच्छा, प्रजापिता ब्रह्मा की प्रजा तो बहुत होनी चाहिए। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि प्रजापिता ब्रह्मा का यह ब्राह्मण कुल है। परमात्मा जब सृष्टि रचते हैं तो ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण रचते हैं। वह ब्राह्मण कुल कब तक चलता है? कुल तो देवताओं का भी है, फिर वह गुम हो जाता है। फिर क्षत्रिय कुल गुम हो जाता। वैश्य कुल भी गुम हो जाता। शूद्र कुल भी गुम होता है। फिर ब्राह्मण कुल को ज़रूर होना है। प्रजापिता तो ज़रूर चाहिए। समझना चाहिए, हमारा ब्राह्मण कुल वृद्धि को पाता रहेगा; इतना पावेगा, जो फिर ब्राह्मण कुल से ट्रांसफर हो इनके सतयुग में दैवी कुल में आना है। देवताएँ तो बहुत गाए जाते हैं। ऐसे नहीं, 33 करोड़ देवताएँ हैं। देवताएँ तो वास्तव में बहुत होने चाहिए। अगर 33 करोड़ देवता कुल के कहते, तो ब्राह्मण भी ज़रूर 33 करोड़ होने चाहिए। यह बहुत विचार–सागर–मंथन की बातें हैं। यह तो ज़रूर है– ब्रह्मा मुखकमल से ब्राह्मण नई रचना रची। किसने? शिवबाबा ने। सो भी ज़रूर सन्मुख होगा। तुम कहती हो– शिव की संतान हैं, शिव शक्तियाँ हैं। ब्रह्मा का नाम उड़ाय दिया है। वास्तव में, ब्राह्मण होते ही तुम हो; और कोई ब्राह्मण हो न सके। अब ब्रह्मा की मुखवंशावली कब होनी चाहिए? ज़रूर देवताओं के नस्ल से पहले ब्राह्मण होने चाहिए। बाबा ने समझाया है– ब्राह्मण, देवी–देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, फिर ब्राह्मण बनना है। यह वर्णों का चक्कर बच्चों की बुद्धि में होना चाहिए। तुमको बाप बैठ पढ़ाते हैं, हमको भोलानाथ कहा जाता है। शिवबाबा कितना भोला है! कखपन ले करके उसके बदले में फिर कितना देते हैं। तो भोला ठहरा न! माताएँ भी भोली कही जाती हैं। पिता सिर्फ एक भोलानाथ शिवबाबा है। तुम जानते हो, हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। ब्रह्मा का भी कोई बाप होगा। ब्र०वि०शं० का भी बाप शिवबाबा गाया जाता। उनका फिर कोई बाप हो नहीं सकता। वह है सबका बाप। प०पि० परम+आत्मा, आत्माओं का बाप वह एक, फिर साकार में आते हैं तो ब्रह्मा को बाप कहेंगे। जैसे सिजरा बनाते हैं तो लिखते हैं– बाप को इतने बच्चे, उन बच्चों को इतने बच्चे; तो वह फिर बच्चों के बाप हो गए। ऐसे सिजरा बनता है न! अब इसको (ब्रह्मा) कहा जाता है। ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर ह्युमैनिटी का, ऐसे भी नहीं। ब्रह्मा का संतान सदैव ब्राह्मण रहने चाहिए, सृष्टि भर में नहीं व उन्हों को वर्णों में

ज़रूर आना है। वर्ण गाए हुए हैं। तुम बच्चों को खुशी रहनी चाहिए– हम ब्राह्मण कुल के हैं, हम ब्रह्मा मुखवंशावली हैं। शिवबाबा है दादा, रचता। क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहेंगे। 'क्रियेटर' अक्षर एक को दिया जाय। गॉड इज़ वन। वह ही स्वर्ग का रचता है। स्वर्ग रचते हैं ब्रह्मा द्वारा। शंकर द्वारा नर्क का विनाश। विष्णु द्वारा पालना। जो मेहनत कर स्थापना करते हैं वह ही फिर पालना करते हैं। तुम जानते हो (जो) मेहनत करते हैं वही फिर विष्णु की माला में अथवा कुल में आना चाहिए। यह चक्र की बातें बुद्धि में आनी चाहिए। हम सो ब्राह्मण ही सो देवता बनेंगे। हम सो क्षत्रिय बनेंगे तो दो कला कम हो जावेगी। यह सारा ज्ञान बच्चों को अभी सिखाया जाता है। वहाँ (तो) है प्रालब्ध। फिर कलाएँ कम होती जाती हैं। पिछाड़ी में कलाएँ जल्दी कम होती हैं; क्योंकि माया का प्रवेश है। अब इस ब्राह्मण कुल की वृद्धि ड्रामा अनुसार होनी ही है। बड़ी मेहनत लगती है। इसको कहा जाता है– काया कल्प वृक्ष समान रिज्यूविनेशन। आत्मा जो बंदर मिसल हो गई है वह फिर देवता मिसल बनती है। कोई–2 मनुष्य बंदर के ग्लैण्ड्स निकाल अपन में डलवाते हैं। ऐसे भी कोई–2 ने कराया था– बूढ़े को जवान बनाने बंदर के ग्लैण्ड्स डाले थे; क्योंकि बंदर चंचल होते हैं। यह थोड़ा ही चला, फिर नाम गुम हो गया। अब तुम जानते हो, आत्माओं की बंदर बुद्धि चंचल हो गई हैं। माया ने बिल्कुल ही खत्म कर दिया है। कोई काम की न रही हैं। कोई को भी रचता बाप की पहचान नहीं है। लौकिक संबंध में ऐसा थोड़े ही कोई बच्चा होगा, जिसको बाप की पहचान न हो। भल जिसका छोटेपन में बाप मर जाता है तो भी उनको बताया जाता है, झट याद पड़ जाता है। यह तो वण्डर है जो बाप को भूल जाते! अब बाप कहते हैं, इस समय तुम बहुत अच्छी रीति जानते। दिन–प्रतिदिन तुम्हारा प्यार बढ़ता जावेगा। खज़ाना धारण कर और देते जावेंगे। खुशी का पारा चढ़ना है, हम मनुष्य से देवता बनने पुरुषार्थ कर रहे हैं। बच्चे ....ते हैं, तो कहते हैं– रात को जागकर योग में बैठें (कल रात को जालंधर के गोप रात को जागकर योग में बैठे थे) क्यों न कमाई करें! वहाँ तो गौरख धंधे में ही थक जाते हैं। यहाँ अच्छा चांस है। बाबा की याद में बैठेंगे तो हमारा याद का चार्ट आगे दौड़ी पहनेगा। बहुत फायदा है। प्रैक्टिस तो करनी है चलते–फिरते याद करने की; परन्तु यहाँ माया का कोई .... नहीं है। पहाड़ पर एकांत ही होती है। बॉम्बे और यहाँ की जलवायु में कितना फर्क है! कोई–2 कहते हैं, घर बैठे हम वायुमण्डल को शुद्ध बनाते हैं। ऐसे बड़े–2 लिखकर गए हैं। ऋषि–मुनि आदि के लिए समझते थे, घर में बैठे भारत को शुद्ध बनाने की मदद करते हैं। याद में रहते थे, मदद करते थे शांत में रहने की; परन्तु इनसे दुनिया में तो शांति हुई नहीं। वह है अल्प काल क्षणभंगुर। सिर्फ पवित्रता के बल से भारत को थमाते रहे। बाप कहते हैं, भक्तिमार्ग में कितनी भी मेहनत करते आए, फिर भी भारत रसातल ही में गया है। मंदिर आदि भी भारत में बहुत हैं; परन्तु ऑक्युपेशन का किसको पता नहीं। ल०ना० के मंदिर बिरला बनाते रहते हैं; परन्तु उन्होंने क्या किया, कुछ पता नहीं। मंदिर आदि बनते आए हैं, फिर भी भारत की हालत दुखी होती जा रही है! अब यह भी समझते हैं, महामारी लड़ाई से विनाश देखने में आता है। बरोबर प०पि०प० आते हैं, विनाश होता है; परन्तु यह नहीं जानते, फिर स्थापना भी होना है। कहते हैं, यह तो महाभारत लड़ाई है। भगवान भी ज़रूर आया हुआ होना चाहिए; क्योंकि स्थापना–विनाश–पालना बाप का ही काम है। अभी तुमको सफेद कपड़ा किया हुआ है। आत्मा को सफेद घोड़ा पोश था, सुंदर कहा जाता था। अब आत्मा को काला पोश है; इसलिए श्याम और सुन्दर कहा जाता है। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि अब इस पुराने शरीर को छोड़ने (वाले) हैं। भारत में, स्वर्ग में तो नैचुरल सुंदरता थी। वह अब कोई विलायत में नहीं है। वहाँ तो नैचुरल ब्यूटी हर चीज़ की थी। राधे–कृ० कितने सुन्दर थे! नैचुरली कोई लिपस्टीक–काजल आदि नहीं लगाना पड़ता। नैचुरल ब्यूटी रहती है। शोभा करने लिए वहाँ कुछ करना नहीं पड़ता। कृष्ण को कितना सब याद करते हैं। वहाँ तत्व भी सतोप्रधान रहते हैं। यहाँ तो तत्वों में भी चंचलता

है– आज डैम (फट) गए। यह बेकायदे हुआ। यहाँ भारत में सब इररिलीजियस बन गए हैं। अब फिर बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वह है ही स्वर्ग का रचता, ज़रूर राजयोग यहाँ ही सिखावेंगे। स्वर्ग में रहने लायक ज़रूर कर्म सिखावेंगे न! तुमको 84 जन्मों का सारा हिसाब–किताब बताते हैं। वो तुम्हारा पाप का खाता पड़ा हुआ है। इसको खलास कर फिर पुण्य का खाता भरना है। बाप को याद करते रहो, स्वदर्शचक्र फिराते रहो। जैसे बाप साइलेंस है, इनके अंदर सारा ज्ञान है; मनुष्यों में शास्त्रों का, बैरिस्टरी आदि का (ज्ञान) है। आत्मा कब निल होती नहीं। निल हो तो एक्ट कैसे चले! पार्ट भरा हुआ ही है। बाप का भी एक्ट है। चेतन है, ज्ञान का सागर है, शांति का सागर है, तब तो कहते हैं– बाबा, शांति दो, सम्पत्ति दो। बाप समझाते हैं– कर्म, विकर्म कैसे होते हैं। सतयुग में कब तुम्हारे कर्म, विकर्म नहीं होते। माया ही विकर्म बनाती है। पाप करते हैं तो पुण्य भी करते हैं। बाप से सुख मिलता है। कोई बीमार होगा तो कहेंगे– कर्मभोग है। बच्चे जन्मते ही मर जाते हैं व बीमार हो जाते हैं तो कहते हैं– इनका कर्मभोग है, ऐसा पाप किया है! बाप बैठ कर्मों की गति बतलाते हैं। अब बाप,टीचर,गुरु की हैसियत में तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ, जो कर्म विकर्म न बनेगा। विकर्म बनाने वाली माया ही न रहेगी। स्वर्ग में तो जावेंगे, फिर इसमें ऊँच पद पाने लिए पढ़ाता हूँ, मनुष्य से देवता बनाता हूँ। यह शरीर छोड़ जाए देवता बनेंगे। देवताएँ होते ही हैं स्वर्ग में। उन्हों की महिमा सर्वगुण सम्पन्न.....; परन्तु वह कैसे बने, कब बने, ज़रूर एक ही ... बाप होंगे। अभी कलहयुग में तो देखो, कुछ भी नहीं है, जबकि इस समय कृष्ण की सोल साँवरी है। वह सोल खुद कहती है– मैं बहुत जन्मों के अंत में, वह ही पूज्य सो पुजारी बना हूँ। मुझे लखीराज कहते थे। मेरे शरीर का नाम 'लखीराज' था। अभी बाबा ने समझाया है– तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। बरोबर यह है साधारण बूढ़ा तन। बाप कहते हैं, इनमें मैंने प्रवेश किया है। कल्प–2 इनमें आता हूँ। इनका नाम ब्रह्मा रखा है। यह किराये पर आत्मा ने मकान लिया है। अब ब्राह्मण वृद्धि को पाते रहते हैं। ब्राह्मण कुल कितना बड़ा होगा। ऊँच ते ऊँच है बाबा, फिर सूक्ष्मवतन, फिर यह स्थूलवतन। वह बाबा कैसे ब्रह्मा तन में आते हैं, कैसे ब्राह्मण बनते हैं, कितने सूर्यवंशी देवताएँ होंगे– यह बना–बनाया ड्रामा है; जैसे कल्प पहले वृद्धि को पाया था वैसे वृद्धि को पाते रहेंगे और पुरुषार्थ करते रहेंगे। बाप कहते हैं– तुम भी 21 जन्म लिए अपन को इन्श्योर करो। ऐसी कोई इन्श्योरेन्स कम्पनी क्या होती है, जो कहे– 21 जन्मों लिए इन्श्योर करो, कचरपट्टी देकर 21 जन्मों लिए राजभाग लो। फॉलो करो मदर–फादर। कर्म तो तुमको करना है न! राजा तुमको बनना है। मैं तो हूँ ही पूज्य। मैं पुजारी नहीं बनता हूँ। मैं हीरे जैसा महाराजा बनता ही नहीं हूँ जो फिर गरीब बनना पड़े। मेरे लिए यह रिज़र्व है। जब तुम पतित बनते हो तब पावन बनाने आता हूँ। गाते भी हैं– पतित–पावन। सो तो एक होगा। ऐसे तो नहीं कहते, पतित–पावन लाखों गुरु। अभी तो सारी दुनिया पतित हैं, तब बाप कहते हैं– मैं सबका आकर उद्धार करता हूँ। अंधश्रद्धालु मनुष्य समझते हैं यह साधु–गुरुलोग, पुण्य आत्मा, महान आत्मा है; इसलिए अपवित्र लोग माथा टेकते हैं। पतित दुनिया में पावन आत्मा रह न सके। सबकी आत्माएँ तमोप्रधान होती है। हाँ, कुछ पवित्र रहते हैं। देवताएँ जब वाममार्ग में जाते हैं तो भी कुछ थमाते हैं; परन्तु इस समय कोई काम के न रहे हैं। पहला नम्बर ही तमोप्रधान बनता, तो सब बन पड़ते हैं; तब गाते हैं– पतित–पावन आओ। एक ही बार आते हैं। ड्रामा अनुसार पवित्र बन उस बाप से वर्सा पाते हो हूबहू कल्प पहले मुआफिक। कल्प–2 ब्राह्मण बनेंगे, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र– इसको कहा जाता है स्वदर्शनचक्र बुद्धि में फिरता रहता है। समझाने लिए फिर भी शंख है तुम्हारा। स्वदर्शनचक्रधारी कैसे बनो, इसके लिए शंख ध्वनि करनी है। बाप ने भी शंख बजाय कर समझाया, तुम भी शंख बजाय कर समझाओ तो अंदर चक्र फिरता रहेगा। बाप कहते हैं– ज्ञानी तू आत्मा, तो जो ज्ञान शंख बजाने वाले हैं वह हमको प्यारे हैं। शंख तो ज़रूर बजाना पड़े, नहीं तो मनुष्य को स्वदर्शन

चक्रधारी कैसे बनावेंगे! समझेंगे कैसे? जो समझेंगे, उनकी बुद्धि में चक्कर फिरता रहेगा। हाँ, चुप भी रहना है। हम पिछाड़ी में चुप रहते हैं बाबा की याद में। उस समय समझने वाला भी कोई न रहेगा। खूनी नाहक खेल चलता है, फिर उसी समय शंख की दरकार न रहेगी। स्वदर्शनचक्र बुद्धि में फिरता रहेगा। फिरते–2 फिर तुम देवता बन जावेंगे। यह बाप बैठ समझाते हैं, मनुष्य क्या जाने! तो भोलानाथ ही उनको कहते हैं। गुरुओं पिछाड़ी बहुत धक्के खाए हैं और घर में बैठे सिर्फ बाप को याद करो, स्वदर्शचक्र फिराते रहो। यहाँ तुम आते हो रिफ्रेश होने। यहाँ बाबा की याद ऑटोमैटिकली रहती है। शिवबाबा ब्रह्मा तन में बैठे हैं। तुम ही अनुभवी हो। बाप और रचना के आदि–मध्य–अंत को और कोई जान न सके। तुम बाप से सुनते हो, फिर सुनाते हो, फिर सतयुग में प्रालब्ध भोगेंगे। इस पढ़ाई की राजविद्या सीखते हैं। स्कूल तो चाहिए न! भाषा तो वहाँ एक ही चलती है। अभी तो हज़ारों–लाखों भाषाएँ हैं। सतयुग में एक राज्य, एक भाषा होती है। 5000 वर्ष पहले एक ही राज्य था। लॉग–2 ऐगो सूर्यवंशी राजधानी थी अर्थात् 5000 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, ल०ना० का राज्य था। मनुष्य यह भी नहीं जानते। कहते भी हैं– 3000 वर्ष बिफोर क्राइस्ट, यहाँ देवताएँ राज्य करते थे। तो 5000 वर्ष हुआ न! फिर शास्त्रों में भी सब बातें कहाँ से आई हैं! सुनते हुए भी कोई की बुद्धि नहीं चलती। वह तो सिर्फ मुख से बोल देते हैं, दिल से किसको लगता नहीं है। तुम्हारे दिल में तो अब लगता है। तुम बच्चे ही ऑलराउण्डर हो। तुम ही बहुत काल से बच्चे बिछुड़ कर आए मिलते हो। पार्ट बजाने यहाँ आए हो। पहले देवता का पार्ट बजाया, फिर क्षत्रिय का। तुम्हारा पार्ट चलता ही रहता है। इसके बीच में इस्लामी, बौद्धी आते जाते हैं। आते–2 अभी अथाह धर्म हो गए हैं। फिर सतयुग में एक धर्म होगा, चक्र फिरेगा। यह है स्वदर्शनचक्र। शास्त्रों में तो कौरवों–पांडवों की युद्ध बैठ दिखाई है। अर्थ का अनर्थ कर दिया है। विद्या को अविद्या बनाय दिया है; और, भक्तिमार्ग का घमण्ड कितना है! भारत में ही मंदिर बहुत हैं। पहला मुख्य मंदिर है शिवबाबा का। तो ज़रूर भारत में ही आया होगा। कैसे आया, किसको भी पता नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी यहाँ नहीं आते। वह हैं सूक्ष्मवतन के। यहाँ पहले–2 सतयुग (में) ल०ना० और उनकी राजधानी थी। अभी कलहयुग में क्या है, सो तुम जानते हो। कलहयुग के बाद सतयुग ज़रूर आया। बलिहारी एक शिवबाबा की है। ब्र०वि०शं० कुछ भी नहीं। शिवबाबा आय कर सबका ऑक्युपेशन बतलाते हैं। तुम नॉलेजफुल बन जाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह ब्राह्मण कुल बहुत ऊँचा है। तुम हो गुप्त वेश में। दूसरा कोई ब्राह्मण हो न सके। ब्राह्मण सो देवता बन गए, फिर जब चक्र पूरा हो तब ब्राह्मण बने। बाकी वह है जिस्मानी ब्राह्मण, जो तीर्थ यात्रा आदि पर ले जाते हैं। रात को बच्चे योग में बैठे थे। यह भी अच्छा ही है। यह है (चार्ट) को बढ़ाना। यहाँ अच्छी दौड़ी पहन सकेंगे। योग में बैठने से विकल्प भी आवेंगे। देखना है– कहाँ जलन्धर व दुकान आदि तो याद नहीं पड़ा। माया उस अवस्था में रहने न देती है। नींद का भी आ जाता है। किस्म–2 की अवस्था रहती है। माया दुश्मन है। अच्छा, मीठे–2 व सिकीलधे बच्चों प्रति दिल व जान, सिक व प्रेम से मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

वह सन्यासी तो पवित्र बनने लिए वैराग सिखलाते, घर–बार छुड़ाते हैं। अब बाप कहते हैं– तुम इस पुरानी दुनिया से ही बुद्धियोग तोड़ो। भल बैठे रहो। नॉलेज भी बहुत सहज है। भल कोई बीमार हो, फिर भी (यहाँ) बैठ सुनते रहे तो बुद्धि में भरता जावेगा। मनुष्य पिछाड़ी को काशी में जाकर रहते हैं। यहाँ तो डायरैक्ट बाप रहते हैं; परन्तु ऐसे भी नहीं, यहाँ आकर बैठना। तुम कहाँ भी याद में रहो, कहाँ भी स्वदर्शनचक्रधारी बनते हुए बाप को याद करते रहो। यह भी बड़ी मदद है। देखो, आत्मा है कितनी ज़री सी– बिन्दी है। उसी बिन्दी में 84 जन्मों का भारी पार्ट नूँधा हुआ है। वण्डर है न! इसको कहा जाता है कुदरत। परमात्मा भी है बिन्दी। उसमें सारा पार्ट भरा हुआ है; परन्तु पहले बड़ा रूप दिखाना पड़ता है। बिन्दी रूप कैसे सिखलाएगा! यह बड़ी समझ की बातें हैं। ॐ